खड़ीबोली का परिचय

HINDI (HC) - 4016

- डॉ० उदय भान भगत
असि० प्रो० नगाँव गर्ल्स
कॉलेज, नगाँव, असम

'खड़ीबोली' पश्चिमी हिन्दी वर्ग की बोली है।
इसके नाम के पीछे दो धारणाएँ क्रियाशील हैं; एक तो परिनिष्ठित मानक हिन्दी और दूसरी इस जन बोली के लिए जो दिल्ली मेरठ के आसपास बोली जाती है। इस बोली के लिए 'कौरवी' नाम का भी प्रयोग होता है। इस बोली का क्षेत्र पुराना 'कुरु' जनपद है, इसी आधार पर राहुल सांकृत्यायन ने इसे 'कौरवी' नाम से अभिहित किया है। 'खड़ीबोली' नाम के पीछे कई मत प्रचलित हैं-

① इस बोली के साहित्यिक साहित्यिक प्रयोग में आने पर इसे खरी अर्थात, परिष्कृत बनाया गया। यही 'खरी' शब्द कालान्तर में खड़ी बना और 'बोली' खड़ीबोली कहलाई।

② कामता प्रसाद गुरु के अनुसार - 'खड़ी' का अर्थ कर्कश है, ब्रजभाषा की अपेक्षा इसमें माधुर्य का अभाव है।

③ किशोरीदास वाजपेयी की दृष्टि में खड़ीबोली में आकारांतता की खड़ी पाई ने इसे यह नाम दिया।

④ गिलक्राइस्ट खड़ी का अर्थ मानक (Standard) या परिनिष्ठित स्वीकार करते हैं।

प्रयोग क्षेत्र

खड़ीबोली या कौरवी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से हुआ है। देहरादून के मैदानी भाग, सहारनपुर मुजफ्फरनगर, मेरठ, दिल्ली, गाजियाबाद, बिजनौर, रामपुर और मुरादाबाद में यह बोली जाती है।

विशेषताएँ

खड़ीबोली में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऑ ध्वनि सामान्य स्वर ध्वनियों के रूप में प्राप्त होती है। 'ऑ' मूल स्वर का प्रयोग अंग्रेजी शब्दों के अतिरिक्त हिन्दी शब्दों के साथ भी होता है। अंग्रेजी 'O' के लिए इसका (ऑ) का प्रयोग होता है। जैसे - college - कॉलेज।

व्यंजन ध्वनियों में क-वर्ग, च-वर्ग, ट-वर्ग, त-वर्ग, प-वर्ग तथा, य, र, ल, व, स, ह के अतिरिक्त कुछ संयुक्त व्यंजन - न्ह, ण्ह, ल्ह, र्ह, म्ह भी प्रयुक्त होते हैं। द्वित्व व्यंजन से पूर्व स्थित दीर्घ स्वर की दीर्घता कुछ कम हो जाती है। जैसे - धोत्ती, भुक्खा, भेज्जा, गाड्डी। इच्छाबलगत तान या प्रबल-ध्वनि के बलाघात के कारण आदि स्वरों का लोप हो जाता है। यथा - इकट्ठा > कट्ठा, अनाज > नाज, इलाज > लाज, शिकारी > सकरी आदि।

(i) अल्पप्राणीकरण - खड़ीबोली में अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। जैसे - झूठ > झूट, भूख > भूक, धोखा > धोका।

(ii) परसर्ग - खड़ीबोली में परसर्गों का रूप निम्नलिखित है -

कर्ता — ने, नैं, नों

कर्म, सम्प्रदान — के, को, कूँ, नै, नूँ।

करण, अपादान — से, सूं, सौं, ते, तैं।

सम्बन्ध — का, के, की

अधिकरण — प, पे, पै, पर, में।

(iii) सर्वनाम

पुरुषवाचक

		एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष (मैं)	—	मैं, मैं, मैंने	हम, हमने।
मध्यम पुरुष (तुम)	—	तू	तुम
अन्य पुरुष (वह)	—	ऊ, ओह, ओ	वे, वो, वोह
निश्चयवाचक (यह)	—	ई, ए, यो, इस	ये, यै, इन
सम्बंधवाचक (जो)	—	जो, जोण, जिस	जिन
प्रश्नवाचक (कौन)	—	कोण, कुण, किस	किन

(iv) खड़ी बोली का क्रियारूप निम्नलिखित है-

सहायक क्रिया

	वर्तमान काल	भूतकाल	भविष्यत् काल
उत्तम पुरुष	हूँ	था, हुँगा, होंगे	हैं, थे, हूँगा, होंगे
मध्यम पुरुष	है	था, हुँगा, होंगे	हो, थे, होंगा
अन्यपुरुष	है	था, हुँगा, होंगे	हो, थे।

पूर्वकालिक क्रिया

लेकर > लैके
खाकर > खाके
जाकर > जाके

आज्ञार्थक क्रिया

देखो, पढ़ो, सुनो, जाओ, आओ।

प्रेरणार्थक क्रिया

बुलाव, बुलवाव, चलाव, चलवाव, पढ़ाव, पढ़वाव
(बुलाओ) (बुलवाओ) (चलाओ) (चलवाओ) (पढ़ाओ) (पढ़वाओ)

क्रियार्थक संज्ञा

आना > आणा
जाना > जाणा
खाना > खाणा
देखना > देखणा